इकाई 1 यूरोप में समाजशास्त्र का उदय

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 समाजशास्त्र के उदय की पृष्ठभूमि

1.2.1 प्रबोधन युग

1.2.2 यूरोपीय समाज का स्वरूप तथा उसमें परिवर्तन

1.3 समाजशास्त्र का उदय: सामाजिक परिस्थितियाँ

1.3.1 वाणिज्यिक क्रांति

1.3.1.1 बैंकिंग व्यवस्था का विस्तार

1.3.1.2 नए वर्ग का उदय

1.3.2 वैज्ञानिक क्रांति

1.3.2.1 विज्ञान के सामाजिक प्रकार्य

1.3.2.2 मध्यकाल में विज्ञान की स्थिति

1.3.2.3 पुनर्जागरण काल

1.3.2.4 कॉपर्निकस क्रांति

1.3.3 पुनर्जागरण युग के बाद के महत्वपूर्ण परिवर्तन

1.3.3.1 भौतिकी तथा गणित में प्रयोग

1.3.3.2 जीव विज्ञान तथा विकासवाद का सिद्धांत

1.4 फ्रांसीसी क्रांति

1.4.1 फ्रांसीसी समाज का बुनियादी स्वरूप

1.4.2 फ्रांसीसी समाज के राजनीतिक पहलू

1.4.3 फ्रांसीसी समाज के आर्थिक पहलू

1.4.4 फ्रांस में बौद्धिक विकास का सिलसिला

1.4.5 महत्वपूर्ण घटनाएं

1.5 औद्योगिक क्रांति

1.5.1 नये अन्वेषण

1.5.2 समाज और औद्योगिक क्रांति का प्रभाव

1.5.3 औद्योगिक क्रांति के महत्वपूर्ण विषय

1.6 समाजशास्त्र के उदय की धारा पर लक्षित बौद्धिक प्रभाव

1.6.1 इतिहास का दर्शन

1.6.2 विकास के जीव वैज्ञानिक सिद्धांत

1.6.3 सामाजिक परिस्थितियों के सर्वेक्षण

1.7 सारांश

1.8 शब्दावली

1.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

इस इकाई में यूरोप में समाजशास्त्र के उदय पर विचार किया गया है। इस इकाई के अध्ययन के बाद आपके लिये संभव होगा

- समाजशास्त्र के उदय की पृष्ठभूमि की व्याख्या करना
- चौदहवीं शताब्दी से लगभग अट्ठारहवीं शताब्दी तक यूरोप की सामाजिक परिस्थितियों का उल्लेख करना
- फ्रांसीसी तथा औद्योगिक क्रांतियों की मुख्य विशेषताओं का विवरण करना
- समाजशास्त्र के उदय को प्रभावित करने वाली तत्कालीन मुख्य वैचारिक प्रवृत्तियों की व्याख्या करना।

1.1 प्रस्तावना

यह "समाजशास्त्रीय सिद्धांत" पाठ्यक्रम (ई.एस.ओ.-13) के खंड 1 की पहली इकाई है। इसमें बताया जाएगा कि समाजशास्त्र के उदय और अट्ठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के यूरोप की सामाजिक एवं वैचारिक परिस्थितियों के बीच क्या संबंध है। ऐसा हमने इसलिए किया है क्योंकि एक विषय के रूप में समाजशास्त्र का उदय सबसे पहले यूरोप में ही हुआ। इसलिए उस समय यूरोप में विद्यमान सामाजिक एवं बौद्धिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में ही समाजशास्त्र का अध्ययन किया जा सकता है। इस परस्पर संबंध को भली प्रकार समझ लेने से समाजशास्त्र के संस्थापकों के विचार बेहतर ढंग से समझने में आपको सुविधा होगी। इन प्रमुख समाजशास्त्रियों और उनके विचारों पर आगे की इकाइयों में विवेचना की गई है।

भाग 1.2 में समाजशास्त्र के उदय की पृष्ठभूमि दी गई है। समाजशास्त्र के उदय से पूर्व यूरोप की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक परिस्थितियां समझाने के लिए भाग 1.3 में हमने आपको चौदहवीं से अट्ठारहवीं शताब्दी तक यूरोप में हुई वाणिज्यिक क्रांति तथा वैज्ञानिक क्रांति का संक्षेप में परिचय दिया है।

इसके पश्चात् उस युग की दो अत्यंत महत्वपूर्ण घटनाओं अर्थात् फ्रांसीसी क्रांति तथा औद्योगिक क्रांति की चर्चा की गई है। यूरोप में वाणिज्यिक क्रांति तथा वैज्ञानिक क्रांति के बाद हुई इन क्रांतियों का समाजशास्त्र के मुख्य मुद्दों पर अमिट प्रभाव पड़ा। इन पहलुओं की चर्चा भाग 1.4 तथा भाग 1.5 में की गई है।

भाग 1.6 में आपको यह जानकारी दी गई है कि **प्रबोधन (enlightenment)** के बाद विभिन्न बौद्धिक सिद्धांतों ने समाजशास्त्र के विकास को किस प्रकार प्रभावित किया।

1.2 समाजशास्त्र के उदय की पृष्ठभूमि

यूरोप में समाजशास्त्र के उदय को समझने के लिए हमें समाज तथा विचारों के बीच संबंध को समझना होगा। किसी युग की सामाजिक परिस्थितियों तथा तात्कालिक विचारों के बीच सदैव संबंध हुआ करता है। इन विचारों की उस समय में प्रधानता होती है।

आइए, उदाहरण के तौर पर हम अपने देश के राष्ट्रीय आंदोलन के संदर्भ में इस संबंध की व्याख्या करें। ब्रिटिश शासन में भारतीय जनसमुदाय को उपनिवेशवाद के सभी कुप्रभावों को झेलना पड़ा। आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक - हर दृष्टि से भारतीयों का शोषण, दमन एवं अपमान किया जाता था। साथ ही उपनिवेशवादी आर्थिक नीतियों के

फलस्वरूप भारतीय मध्यम वर्ग का उदय हुआ। इस वर्ग के लोगों को यूरोप के **उदारवादी** तथा क्रांतिकारी सामाजिक चिंतन की जानकारी भी मिली। उपनिवेशवादी शोषण से विक्षुब्ध होकर उन्होंने भारत को स्वतंत्र कराने के लिए अपनी लेखनी का प्रयोग किया व उनके विरुद्ध अभियान चलाया। इस तरह ब्रिटिश शासन के विरोध में राष्ट्रीय आंदोलन शुरू हुआ। संस्कृति, रंगमंच, गीत, साहित्य आदि में स्वतंत्रता की भावना व्याप्त हो गई थी। प्रेमचन्द का उपन्यास 'कर्मभूमि', जो दूरदर्शन पर धारावाहिक के रूप में दिखाया जा चुका है, उस समय के परिवर्तनों को दर्शाता है। अत: यह स्पष्ट है कि विचारों का मूल आधार अनिवार्यत: सामाजिक परिवेश में ही होता है।

1.2.1 प्रबोधन युग

हमें समाजशास्त्र के उदय को भी सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक पृष्ठभूमि में समझना होगा। प्रारम्भिक समाजशास्त्रियों द्वारा विकसित विचारों की जड़ें उन सामाजिक परिस्थितियों में है, जो उस समय के यूरोप में मौजूद थीं। अत: एक वैज्ञानिक विषय के रूप में समाजशास्त्र के उदय के प्रारंभिक चिन्ह हमें यूरोपीय इतिहास के उस काल में तलाशने होंगे, जिसमें फ्रांसीसी क्रांति तथा औद्योगिक क्रांति के रूप में इतने व्यापक सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तन हुए। यूरोपीय समाज में परिवर्तन का यह दौर प्रबोधन युग (Enlightenment Period) के नाम से जाना जाता है, क्योंकि इसमें अट्ठारहवीं शताब्दी के फ्रांसीसी दार्शनिकों की चेतना निश्चित रूप से व्यक्त हुई है। प्रबोधन युग में **सामंतवादी** यूरोप के परम्परागत चिन्तन में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। इससे यथार्थ की नई दृष्टि और उसके चिंतन के नए तरीके ने जन्म लिया। लोग जीवन के हर पहलू पर तार्किक चिन्तन करने लगे तथा इस समय धर्म, सरकार या राजा की कही बात को अंतिम सत्य मानने की प्रवृत्ति समाप्त होने लगी।

यह विश्वास किया गया कि प्रकृति तथा समाज, दोनों का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन किया जा सकता है। मनुष्य अनिवार्यत: तार्किक प्राणी है। तर्कपूर्ण सिद्धांतों पर आधारित समाज मनुष्य को अपनी अनंत क्षमताओं को पहचानने में अधिक सहायक सिद्ध होता है। ऐसे विचारों की जड़ें यूरोप में विज्ञान तथा वाणिज्य के विकास में ही निहित थीं। वाणिज्यिक क्रांति तथा वैज्ञानिक क्रांति के फलस्वरूप एक नया दृष्टिकोण पनपा तथा यह फ्रांसीसी तथा औद्योगिक क्रांतियों के दौरान पुष्ट हुआ। इस नए दृष्टिकोण से समाजशास्त्र की नींव पड़ी।

यूरोपीय समाज में हो रहे सामाजिक परिवर्तन को समझने के लिए सबसे पहले हमें उस समाज का अध्ययन करना होगा, जो परम्परागत यूरोप में अर्थात् प्रबोधन युग से पूर्व वहां मौजूद था।

1.2.2 यूरोपीय समाज का स्वरूप तथा उसमें परिवर्तन

प्राचीन यूरोप का स्वरूप परम्परावादी था। उसकी आर्थिक व्यवस्था में भूमि को केन्द्रीय स्थान प्राप्त था। सामंत भूमि के मालिक थे तथा किसान भूमि पर काम करते थे। समाज दो वर्गों में बंटा था और उनका विभाजन एकदम शीशे की तरह साफ था। धर्म समाज का आधारभूत सिद्धांत था। धर्मगुरु, जैसे पादरी, ही यह तय करते थे कि क्या नैतिक है और क्या नहीं। परिवार तथा नातेदारी संबंधों का मानव-जीवन में अति महत्वपूर्ण स्थान था। राजतंत्र की जड़ें समाज में बहुत गहरी जमी हुई थीं। ऐसी मान्यता थी कि ईश्वर ने राजा को लोगों पर शासन करने के लिए भेजा है।

फ्रांसीसी क्रांति तथा औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप जो नया यूरोप उभरकर सामने आया, उसने प्राचीन यूरोप के हर मुख्य पहलू को चुनौती दी। फलस्वरूप वर्गों का पुनर्गठन हुआ। पुराने वर्ग ध्वस्त हो गए तथा नए वर्गों ने जन्म लिया। धर्म को चुनौती दी जाने लगी। धर्म का महत्व

पहले से कम हो गया। पारिवारिक निष्ठाओं का स्थान वैचारिक आस्थाओं ने ले लिया। महिलाओं की स्थिति में बदलाव आया। अंतत: राजतंत्र की समाप्ति हुई और **लोकतंत्र** का आगमन हुआ।

समाज की सभी मुख्य धारणाओं - धर्म, समुदाय, सत्ता, सम्पत्ति आदि की नई व्याख्याएं होने लगी और उन्हें नए संदर्भ मिलने लगे।

वर्तमान तथा अतीत के बीच अंतर भी साफ़ हो गया। कुलीन वर्ग के लोगों के लिए वर्तमान भयावह हो गया क्योंकि उनके जान-माल के लिए ख़तरे पैदा हो गए थे जबकि किसानों के लिए वर्तमान अत्यंत सुखद था, क्योंकि उन्हें नए अवसर तथा नई शक्ति की प्राप्ति हो रही थी।

इस प्रकार आपने देखा कि सब लोग इस परिवर्तन से प्रभावित हो रहे थे। यूरोप में हो रहे इन परिवर्तनों का महत्व हम कितना भी आंकें वह कम होगा। आपकी जानकारी के लिए अगले भाग में हमने इनकी विस्तार से चर्चा की है। परंतु पहले बोध प्रश्न 1 को पूरा कर लें।

बोध प्रश्न 1

i) प्राचीन यूरोपीय समाज की दो मुख्य विशेषताओं का दो पंक्तियों में उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

ii) निम्नलिखित वाक्यों में ख़ाली स्थान भरिए।

क) स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय मध्यम वर्ग को यूरोप के ..... और ..... सामाजिक चिन्तन की जानकारी भी मिली।

ख) प्राचीन यूरोप की अर्थव्यवस्था में ..... का प्रमुख स्थान था।

ग) फ़्रांसीसी तथा औद्योगिक क्रांतियों के फलस्वरूप जो ..... यूरोप उभर कर सामने आया, उसने प्राचीन यूरोप के हर ..... पहलू को चुनौती दी।

1.3 समाजशास्त्र का उदय: सामाजिक परिस्थितियाँ

एक पृथक विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र का उदय उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ। यूरोप उस समय फ़्रांसीसी तथा औद्योगिक क्रांतियों के कारण अनंत परिवर्तनों के दौर से गुज़र रहा था। सच तो यह है कि समाजशास्त्र को नए औद्योगिक समाज का विज्ञान माना जा सकता है।

किन्तु फ़्रांसीसी क्रांति तथा औद्योगिक क्रांति का ब्यौरा देने से पूर्व आपको यूरोप में चौदहवीं से अट्ठारहवीं शताब्दी के बीच हुई वाणिज्यिक क्रांति एवं वैज्ञानिक क्रांति से अवगत कराना उचित होगा। यूरोप में इन्हीं दो क्रांतियों का काल "पुनर्जागरण युग" (renaissance) कहलाता है। इस युग में कला, साहित्य, संगीत, विज्ञान, मूर्तिकला आदि सभी विषयों को नया जीवन मिला।

1.3.1 वाणिज्यिक क्रांति

"वाणिज्यिक क्रांति" का संबंध सन् 1450 से लगभग सन् 1800 के बीच हुए घटनाक्रम से है। मध्यकालीन यूरोप की अर्थव्यवस्था में विकास की संभावनाएं बहुत सीमित थीं। इन घटनाओं ने मध्यकालीन यूरोप की एकदम ठहरी हुई तथा जड़ अर्थव्यवस्था को अधिक गतिशील और विश्वव्यापी प्रणाली का रूप प्रदान किया। वाणिज्यिक क्रांति का अभिप्राय पंद्रहवीं शताब्दी के बाद हुए व्यापार तथा वाणिज्य के विस्तार से है। यह विस्तार इतना व्यापक तथा सुव्यवस्थित था कि

इसे क्रांति का नाम दिया गया है। यह विस्तार वास्तव में कुछ यूरोपीय देशों द्वारा अपनी आर्थिक एवं राजनीतिक सत्ता को बढ़ाने तथा सुदृढ़ करने के लिए किए प्रयासों का परिणाम था। ये देश थे - पुर्तगाल, स्पेन, हॉलैंड और इंग्लैंड। आइए, अब हम वाणिज्यिक क्रांति के महत्वपूर्ण पहलुओं का अध्ययन करें, जैसे नए देशों की खोज तथा उन पर विजय। भारत, चीन जैसे प्राच्य अथवा पूर्वी देशों के साथ यूरोप का व्यापार स्थल मार्ग से होता था।

इटली के उत्तरी शहर वेनिस तथा जेनोआ व्यापार के प्रमुख केन्द्र थे। व्यापार पर इटली के एकाधिकार के कारण मसालों, रेशम आदि पूर्वी देशों से आयातित माल के मूल्य बहुत ऊंचे थे। इसलिए पुर्तगाल तथा स्पेन पूर्वी देशों के लिए ऐसे मार्ग की तलाश में थे, जो इटली के नियंत्रण से मुक्त हों।

इस प्रकार, स्थल-मार्ग की बजाय समुद्री मार्गों की ओर ध्यान दिया गया। पुर्तगाली समुद्री यात्राओं तथा नई खोजों में कुशल माने जाते थे। आपको मालूम ही होगा कि वास्को डि गामा अफ़्रीका के दक्षिणी तट से होता हुआ 1498 में भारतीय तट पर उतरा था।

इटलीवासी क्रिस्टोफ़र कोलम्बस भी स्पेन के राजा तथा महारानी के संरक्षण में भारत की खोज पर निकला था। किन्तु वह उत्तरी अमरीका जा पहुंचा। अमरीका की इस संयोगमय खोज से स्पेन को बहुत लाभ हुआ। इससे अमरीका पर स्पेन के साम्राज्य की नींव पड़ गई।

ब्रिटेन, फ्रांस तथा हॉलैंड भी स्पेन और पुर्तगाल का अनुसरण करने लगे। इसके फलस्वरूप भारत और अफ़्रीका के कुछ भाग, मलक्का, स्पाइस आइलैंड, वेस्ट इंडीज़ व दक्षिण अमरीका पर स्पेन, पुर्तगाल, इंग्लैंड, फ्रांस और हॉलैंड का आर्थिक नियंत्रण हो गया। व्यापार ने विश्व-व्यापी उद्यम का रूप ले लिया। इस बीच इटली के शहरों का एकाधिकार समाप्त हो गया।

यूरोपीय मंडियों में पूर्व से मसाले और कपड़ा, उत्तरी अमरीका से तम्बाकू, दक्षिण अमरीका से चॉकलेट, कोको और कुनीन तथा अफ़्रीका से हाथी दांत जैसी वस्तुएं खूब पहुँचने लगीं। इसके अतिरिक्त अफ़्रीका से लोगों को दास बनाकर भी लाया जाने लगा। अमरीका की खोज के बाद व्यापार का क्षेत्र और फैल गया। शुरू में दूसरे देशों से मसाले तथा कपड़ा आदि अधिक मंगाए जाते थे, किन्तु बाद में इस सूची में सोना और चांदी भी जुड़ गए।

वाणिज्यिक क्रांति के और आगे बढ़ने से पुर्तगाल तथा स्पेन की स्थिति कमज़ोर हो गई। यूरोप और विश्व में इंग्लैंड, हॉलैंड तथा फ्रांस का प्रभुत्व बढ़ गया।

1.3.1.1 बैंकिंग व्यवस्था का विस्तार

बैंकिंग का विकास वाणिज्यिक क्रांति का एक प्रमुख पहलू था। ऋण सुविधाओं का विस्तार किया गया, जिससे व्यापारियों के लिए समूचे यूरोप में व्यापार करना सरल हो गया। अट्ठारहवीं शताब्दी में "चैक" का आविष्कार हुआ। सोने और चांदी के सिक्कों के स्थान पर कागज़ की मुद्रा का चलन हो गया।

कंपनियों का विकास: व्यापार तथा वाणिज्य में लगातार वृद्धि को देखते हुए नए प्रकार के व्यापार संगठनों की आवश्यकता महसूस होने लगी। सोलहवीं शताब्दी में "नियमित" कंपनियाँ अस्तित्व में आईं। ये कंपनियाँ अपने-अपने उद्यमों में सहयोग के लिए इकट्ठे हुए व्यापारियों के संघ थे।

सत्रहवीं शताब्दी में "संयुक्त पूँजी" कंपनियों का उदय हुआ। इस व्यवस्था में पूँजी के शेयर (shares of capital) अनेक निवेशकों में बंटे रहते थे। इनमें से कुछ कंपनियाँ "चार्टर्ड कंपनियां" थीं, जिन्हें सरकार की ओर से क्षेत्र विशेष में व्यापार के एकाधिकार की गारंटी मिली हुई थी। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी तथा उच्च ईस्ट इंडिया कंपनी इसी प्रकार की कंपनियां थीं।

1.3.1.2 नए वर्ग का उदय

जैसा कि इस भाग में पहले संकेत किया जा चुका है, इस युग की एक प्रमुख विशेषता मध्यम वर्ग के हाथों में आर्थिक सत्ता का पहुँचना था। सत्रहवीं शताब्दी के अंत तक लगभग सभी यूरोपीय देशों में मध्यम वर्ग प्रभावशाली वर्ग के रूप में उभर चुका था। इनमें व्यापारी, बैंकर, जहाज-मालिक, पूँजीनिवेशक आदि शामिल थे। इस स्तर पर आर्थिक शक्ति ही उनकी मुख्य ताक़त थी। इस इकाई में बाद में यह बताया जाएगा कि किस तरह उन्नीसवीं शताब्दी में यह वर्ग राजनीतिक दृष्टि से भी शक्तिशाली बन गया।

विश्व का "यूरोपीकरण": "यूरोपीकरण" शब्द से हमारा अभिप्राय अन्य देशों द्वारा यूरोपीय तौर-तरीक़ों तथा संस्कृति को अपना लिए जाने से है। व्यापारियों, मिशनरियों और अमरीकी क्षेत्रों पर विजय ने अमरीका के यूरोपीकरण में सहयोग दिया। बाद में उपनिवेशबाद के कारण एशिया तथा अफ़्रीका में भी इस प्रक्रिया का प्रभाव हुआ। आगे बढ़ने से पहले सोचिए और करिए 1 पूरा कर लें।

सोचिए और करिए 1

आपने अभी चौदहवीं से अट्ठारहवीं शताब्दी के बीच यूरोप में हुई वाणिज्यिक क्रांति का ब्यौरा पढ़ा। अब आप प्राचीन भारतीय इतिहास पर एक पाठ्य-पुस्तक (यदि संभव हो तो ग्यारहवीं कक्षा के लिए आर.एस. शर्मा द्वारा लिखित राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा प्रकाशित पुस्तक "*प्राचीन भारत*") पढ़िए और यह पता लगाइए कि क्या इस काल में भारत में भी इससे मिलती-जुलती कोई वाणिज्यिक गतिविधि हुई थी।

इस वाणिज्यिक गतिविधि पर लगभग एक पृष्ठ की टिप्पणी लिखिए। यदि संभव हो तो अपने अध्ययन केन्द्र के अन्य विद्यार्थियों द्वारा लिखी गई टिप्पणियों से अपनी टिप्पणी की तुलना कीजिए।

इस काल में राजतंत्र मज़बूत हुआ, धर्म का प्रभाव कम हुआ और मध्यम वर्ग का उदय हुआ। यह "यूरोपीकरण" की प्रक्रिया की शुरूआत थी, जो उपनिवेशवाद के साथ शिखर पर पहुँच गई। इस प्रकार, यूरोप को आर्थिक विस्तार के नए क्षेत्र मिल गए और उसका आर्थिक प्रभुत्व सारे संसार तक फैल गया। आइए, अब हम वैज्ञानिक क्रांति का अध्ययन करें।

1.3.2 वैज्ञानिक क्रांति

इस भाग में हमने मानव जीवन के एक अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र, विज्ञान, में हुए विकास तथा परिवर्तन का अध्ययन किया है। "पुनर्जागरण काल" में यूरोप में "वैज्ञानिक क्रांति" हुई। इस वैज्ञानिक क्रांति के प्रभाव से न केवल मनुष्य के भौतिक जीवन में परिवर्तन हुआ, बल्कि प्रकृति और समाज के प्रति मनुष्य के विचारों में भी बदलाव आया।

सर्वप्रथम हमें स्पष्ट करना है कि "विज्ञान के इतिहास" से हमारा क्या अभिप्राय है, जिसका कि इस भाग में उल्लेख आएगा। विज्ञान के इतिहास का अर्थ घटनाओं और उनकी तिथियों की सूची मात्र ही नहीं है। यह एक ओर समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था तथा संस्कृति और दूसरी ओर विज्ञान के बीच आदान-प्रदान का वृत्तांत है।

विज्ञान का अध्ययन उसके सामाजिक संदर्भ अथवा पृष्ठभूमि से अलग करके नहीं किया जा सकता। आइए, विज्ञान के सामाजिक प्रकार्यों की चर्चा करें।

1.3.2.1 विज्ञान के सामाजिक प्रकार्य

विज्ञान का विकास समाज से अलग होकर नहीं होता, बल्कि यह मानवीय आवश्यकताओं की प्रक्रिया में ही विकसित होता है। उदाहरण के लिए अनेक प्रकार के टीके (vaccines) यों ही

तैयार नहीं हो गए, बल्कि बीमारियों का इलाज करने की आवश्यकता होने पर उनका विकास किया गया। समाज के भौतिक जीवन को प्रभावित करने के साथ-साथ विज्ञान का विचारों से गहरा संबंध है। समाज में विद्यमान सामान्य बौद्धिक वातावरण विज्ञान के विकास को प्रभावित करता है। इसी प्रकार विज्ञान में नई प्रगति से अन्य क्षेत्रों में लोगों के दृष्टिकोण तथा आस्थाओं में परिवर्तन आ जाता है। इस तथ्य को ध्यान में रखना बहुत आवश्यक है। आपको यह बराबर बताया जाएगा कि किस प्रकार नए वैज्ञानिक विचारों ने विद्वानों को समाज के बारे में नए ढंग से सोचने के लिए प्रेरित किया। यूरोप में समाजशास्त्र के उदय में विज्ञान द्वारा विकसित नए विचारों तथा खोजों ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

1.3.2.2 मध्यकाल में विज्ञान की स्थिति

जैसे कि हमने पिछले भाग में बताया है, मध्यकालीन समाज में सामंतवादी व्यवस्था हावी थी। सत्ता और ज्ञान का केंद्र-बिंदु धर्म था। शिक्षा मुख्यतया धार्मिक प्रवृत्तियों के बारे में ही दी जाती थी। धर्म की रूढ़ियों तथा विश्वासों को चुनौती देना कठिन था। ऐसे वातावरण में नए तथा साहसिक विचारों का उभरना असंभव सा था। इसलिए इस युग में विज्ञान की प्रगति की उपयोगिता केवल उत्पादन की तकनीकों को सुधारने तक सीमित थी।

1.3.2.3 पुनर्जागरण काल

"पुनर्जागरण काल" में वैज्ञानिक क्रांति की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। इससे विज्ञान के क्षेत्र में व्याख्या और समालोचना के युग का सूत्रपात हुआ। यह अतीत से एक स्पष्ट विच्छेद था और प्राचीन सत्ता के लिए एक चुनौती थी। आइए, अब हम इस काल में कला और विज्ञान की कुछ प्रमुख घटनाओं पर दृष्टिपात करें।

चित्रकला: इस युग में कला, साहित्य तथा विज्ञान सभी का विकास हुआ। प्रकृति और मानव शरीर के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित हुआ। यह तथ्य उस काल के उन चित्रों में झलकता है, जिनमें प्रकृति तथा मानव शरीर की सूक्ष्मताओं को चित्रित किया गया था।

चिकित्सा: चिकित्सा में जांच पड़ताल के लिए मृत मानव शरीर की चीड़-फाड़ करने की स्वीकृति दे दी गई। डॉक्टरों और चिकित्सकों ने शरीर की रचना का प्रत्यक्ष रूप से निरीक्षण किया। इस प्रकार, शरीर रचना विज्ञान (anatomy), शरीर क्रिया विज्ञान (physiology) तथा रोगविज्ञान (pathology) में पर्याप्त प्रगति हुई।

रासायनिकी: रासायनिकी का एक सामान्य सिद्धांत विकसित हुआ। ऑक्सीकरण (oxidation), अपचयन (reduction), आसवन (distillation), सम्मिश्रण (amalgamation) जैसी रासायनिक क्रियाओं का अध्ययन किया गया।

समुद्र यात्रा तथा खगोल विद्या: वास्को डि गामा 1498 में भारतीय तट पर पहुंचा। कोलम्बस ने 1492 में अमरीका की खोज की। आपको स्मरण होगा कि यही व्यापार के विस्तार तथा उपनिवेशवाद के प्रारम्भ का युग था। इसी समय खगोल विद्याा में भी लोगों की रुचि बढ़ी क्योंकि इस विद्या की समुद्र-यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका थी।

1.3.2.4 कॉपर्निकस क्रांति

डच वैज्ञानिक निकोलस कॉपर्निकस का सिद्धांत प्राचीन विचारधारा की समूची परम्परा से पहला प्रमुख विच्छेद था। यह आम धारणा थी कि पृथ्वी स्थिर है और सूर्य तथा अन्य नक्षत्र आदि उसके चारों ओर घूमते हैं (इसे "भूकेन्द्रिक" सिद्धांत कहा जाता है)।

किन्तु कॉपर्निकस का विचार भिन्न था। उसने विस्तृत व्याख्याओं की सहायता से यह सिद्ध किया

कि सूर्य स्थिर है और पृथ्वी उसके चारों ओर घूमती है (यह सूर्य केंद्रित सिद्धांत कहलाता है)। कॉपर्निकस के योगदान को क्रांतिकारी माना जाता है, क्योंकि उससे ब्रह्मांड के प्रति विचारधाओं में आमूल परिवर्तन हो गया। अब मनुष्य को ब्रह्माँड का केंद्र नहीं, बल्कि उसका एक अंश मात्र समझा जाने लगा।

सारांश यह है कि पुनर्जागरण काल में विज्ञान ने मनुष्य और प्रकृति के प्रति नए दृष्टिकोण को जन्म दिया। प्राकृतिक वस्तुएं निरीक्षण तथा परीक्षण का विषय बन गईं। कॉपर्निकस क्रांति ने उस आधार को ही धराशायी कर दिया, जिस पर पुराना विश्व खड़ा था। आइए, अब हम पुनर्जागरण युग के बाद में हुए कुछ प्रमुख वैज्ञानिक परिवर्तनों का अवलोकन करें।

1.3.3 पुनर्जागरण युग के बाद के महत्वपूर्ण परिवर्तन

यहाँ हमने वैज्ञानिक शोध के क्षेत्र में उपजे नये परिप्रेक्ष्यों एवं तरीक़ों से प्रेरित हुई नवीन विकासधारा का वर्णन किया है।

1.3.3.1 भौतिकी तथा गणित में प्रयोग

गैलीलियो गैलीली (1569-1642), जोहनिस केप्लर (1571-1630) तथा बाद में आइसक न्यूटन (1642-1727) जैसे भौतिकी वैज्ञानिकों तथा गणितज्ञों की उपलब्धियों से विज्ञान के स्वरूप में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। इससे प्रायोगिक पद्धति (experimental method) को प्राथमिकता मिलने लगी।

इसके फलस्वरूप पुराने विचारों को चुनौती दी गई तथा वैकल्पिक विचार सुझाए गए। ये वैकल्पिक विचार सिद्ध हो जाने पर और बार-बार परीक्षण सफल हो जाने पर स्वीकृत कर लिए जाते थे। ऐसा न होने पर नए समाधान खोजे जाते थे।

इस प्रकार, वैज्ञानिक विधियों को सबसे सही और निष्पक्ष माना जाने लगा। एक विषय के रूप में समाजशास्त्र के उदय का अध्ययन करते समय यह स्पष्ट होगा कि समाज के अध्ययन के लिए इन "वैज्ञानिक पद्धतियों" के उपयोग को किस तरह सही बताया गया है।

1.3.3.2 जीव विज्ञान तथा विकासवाद का सिद्धांत

जैसा कि पहले बताया गया है, मृत मानव शरीर की चीड़-फांड़ से शरीर की रचना और क्रिया को बेहतर ढंग से समझने में सहायता मिली। विलियम हार्वे (1578-1657) ने रक्त के प्रवाह की खोज की। इससे कई प्रकार के नए चिंतन को बल मिला। मनुष्य के शरीर को अब एक-दूसरे के जुड़े अवयवों और परस्पर सम्बद्ध प्रणालियों के संदर्भ में देखा जाने लगा। इस नए ज्ञान का कॉम्ट, स्पेंसर, दर्खाइम तथा अन्य विद्वानों के सामाजिक चिंतन पर गहरा प्रभाव पड़ा। आइए, अब हम जीव विज्ञान के एक अत्यंत रोचक योगदान की चर्चा करें, जिसने उस समय के समाज को उत्तेजित कर दिया था।

ब्रिटिश वैज्ञानिक चार्ल्स डार्विन (1809-1882) ने 1859 में अपनी पुस्तक *"ओरिजिन ऑफ़ स्पीशीज़"* प्रकाशित की। यह पुस्तक उनके विश्व भर के पांच वर्ष लंबे भ्रमण के अनुभवों पर आधारित थी। डार्विन ने यह सिद्धांत प्रस्तुत किया कि पृथ्वी पर उपलब्ध सीमित संसाधनों के उपभोग के लिए विभिन्न जीव एक दूसरे से होड़ करते रहते हैं। इसलिए "सर्वोपयुक्त का जीवित रहना" प्राकृतिक नियम है। कुछ जीव ऐसी विशेषताएं विकसित कर लेते है, जिनके कारण उनका अस्तित्व बना रहता है, जबकि अन्य जीव (स्पीशीज़) लुप्त हो जाते हैं।

डार्विन ने मानवीय विकास का अध्ययन किया, जिसका उल्लेख उसकी पुस्तक *"डिसेंट ऑफ़ मैन"* (1863) में किया गया है। उसने कहा कि मनुष्य का पूर्वज बंदर जैसा प्राणी था, जिसका

अनेक शताब्दियों में मनुष्य के रूप में विकास हुआ है। इस पुस्तक ने समाज को उत्तेजित कर दिया। इससे पहले यह माना जाता था कि ईश्वर ने ही अपनी छवि में मनुष्य की रचना की है। रूढ़िवादियों ने इस मान्यता को अस्वीकार कर दिया कि मनुष्य की उत्पत्ति बंदर से हुई है।

किंतु डार्विन के विकासवाद के सिद्धांत को व्यापक स्वीकृति मिली। विकासवादी विचारकों, विशेषकर हर्बर्ट स्पेंसर, ने इस सिद्धांत को सामाजिक जगत पर लागू किया। स्पेंसर का मत था कि न केवल जीव बल्कि समाज का भी निम्न अवस्था से उच्च अवस्था की ओर विकास होता है। अब तक आपको स्पष्ट हो गया होगा कि वाणिज्यिक क्रांति तथा वैज्ञानिक क्रांति ने किस प्रकार परिवर्तनकारी शक्तियों को गति दी।

अब फ्रांसीसी क्रांति तथा औद्योगिक क्रांति के मुख्य पहलुओं की चर्चा की जाएगी। इन दोनों क्रांतियों ने ऐसी सामाजिक परिस्थितियां पैदा की जिनके फलस्वरूप समाजशास्त्र का उदय हुआ। भाग 1.4 में फ्रांसीसी क्रांति तथा 1.5 में औद्योगिक क्रांति पर विस्तृत चर्चा की गई है।

बोध प्रश्न 2

i) यूरोप में हुई वाणिज्यिक क्रांति की विवेचना दस पंक्तियों में कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

ii) "वैज्ञानिक क्रांति" के दौरान हुए कम से कम दो परिवर्तनों का वर्णन कीजिए, अपना उत्तर आठ पंक्तियों में दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

iii) नीचे दिये गए वाक्यों में ख़ाली स्थान भरिए।

क) समाजशास्त्र को नए ..... समाज का विज्ञान माना जा सकता है।

ख) एक पृथक विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र का उदय ..... शताब्दी में हुआ।

ग) वाणिज्यिक क्रांति तथा वैज्ञानिक क्रांति यूरोप के इतिहास के ..... काल में हुई।

1.4 फ्रांसीसी क्रांति

1789 में हुई फ्रांसीसी क्रांति स्वतंत्रता तथा समानता के लिए मानव संघर्ष के इतिहास को नया मोड़ देने वाली घटना सिद्ध हुई। इस क्रांति ने सामंतवाद के युग को समाप्त करके नई समाज व्यवस्था का सूत्रपात किया। हमने यहां इस क्रांति की रूपरेखा प्रस्तुत की है, जिससे आपको यह स्पष्ट हो जायेगा कि उस समय यूरोप में किस प्रकार की उथल-पुथल हुई थी। इस क्रांति से केवल फ्रांसीसी समाज में ही नहीं बल्कि समूचे यूरोपीय समाज में दूरगामी परिवर्तन हुए। और तो और, अन्य महाद्वीपों के देश जैसे भारत भी इस क्रांति से उपजे विचारों से अछूते नहीं रहे। स्वतंत्रता, भ्रातृत्व तथा समानता जैसे विचार, जो अब हमारे संविधान की प्रस्तावना में उल्लिखित

हैं, फ़्रांसीसी क्रांति की ही देन हैं। आइए, सबसे पहले हम इस क्रांति के कुछ पहलुओं की समीक्षा करें।

1.4.1 फ़्रांसीसी समाज का बुनियादी स्वरूप

फ़्रांसीसी समाज सामंतवादी संपत्ति समूहों (एस्टेटों) में बंटा हुआ था। सामंतवादी फ़्रांसीसी समाज के तीन एस्टेट थे। सामंतवादी यूरोपीय समाजों में "एस्टेट" संस्तरण की एक प्रणाली है, जिसके आधार पर एक वर्ग या एस्टेट का दूसरे वर्गों से स्तर, अधिकार, प्रतिबंधों आदि की दृष्टि से अंतर स्पष्ट होता है।

क) **प्रथम सम्पत्ति समूह या एस्टेट:** इसमें धर्म नेता शामिल थे और यह समूह भी आगे विभिन्न स्तरों में विभाजित था, जिन्हें कार्डिनल, आर्क बिशप, बिशप, ऐबट आदि कहा जाता था। वे बहुत वैभवपूर्ण जीवन बिताते थे और वास्तव में धर्म की ओर बहुत कम ध्यान देते थे। सच तो यह है कि उनमें कुछ लोगों को धार्मिक जीवन की बजाय राजनीतिक जीवन अधिक पसंद था। उनका अधिकतर समय मद्यपान, जूआ आदि विलासितापूर्ण गतिविधियों में बीतता था। उच्च धर्मनेताओं की तुलना में छोटे स्तर के पादरियों को अधिक काम करना पड़ता था तथा निर्धनता की मार भी झेलनी पड़ती थी।

ख) **दूसरा सम्पत्ति समूह या एस्टेट:** इस वर्ग में 'नोबल' थे। नोबल की दो श्रेणियां थी। पहली श्रेणी के नोबल शस्त्रों से तथा दूसरी श्रेणी के नोबल वस्त्रों से पहचाने जाते थे। पहले श्रेणी के नोबल बड़े-बड़े भूस्वामी थे। वे सिद्धांतिक रूप से जनता के रक्षक थे किंतु वास्तव में वे शोषक थे और सारा काम किसानों से लेते थे। वे बड़ी शान-शौकत की ज़िन्दगी बसर करते थे और फ़िजूलख़र्ची उनकी पहचान थी। वे खुद कोई काम नहीं करते थे। उनकी तुलना भारत के सामंती ज़मीदारों से की जा सकती है।

दूसरी श्रेणी के नोबल जन्म से नोबल नहीं थे, बल्कि उन्हें नोबल की पदवी दी जाती थी। वे मजिस्ट्रेट तथा न्यायाधीश थे। इनमें से कुछ लोग उदार तथा प्रगतिशील थे, क्योंकि वे आम लोगों के तीसरे सम्पत्ति समूह से ही उन्नति करके इन पदों पर पहुंचे थे।

ग) **तीसरा सम्पत्ति समूह या एस्टेट:** समाज के शेष लोग इस तीसरे वर्ग में शामिल थे। इनमें किसान, व्यापारी, कारीगर तथा अन्य लोग थे। धर्म नेताओं तथा नोबल वर्ग की तुलना में किसानों की अवस्था बदतर थी। किसान रात-दिन परिश्रम करते थे और उन्हें भारी कर भी देने पड़ते थे, जिससे वे कठिनाई से गुज़र-बसर कर पाते थे। वे ही पूरे समाज के लिए अन्न उपजाते थे। परंतु सरकार की ओर से कोई संरक्षण न होने के कारण उनका जीना दूभर था। राजा भी अन्य दो वर्गों अर्थात् धर्मनेता तथा नोबल को खुश करने के लिए इस तीसरे वर्ग का शोषण करता रहता था। किसान उनके सामने एकदम लाचार थे, जबकि धर्मनेता तथा नोबल राजा की जी-हजूरी करते थे। किसानों के मुकाबले मध्यम वर्ग की दशा काफ़ी बेहतर थी। बुर्जुआ कहलाने वाले इस वर्ग में व्यापारी, बैंकर, वकील, उत्पादक आदि शामिल थे। ये लोग भी तीसरे समूह में थे। 1720-1789 के दौरान शासन की निर्धनता के कारण क़ीमतों में तेज़ी से वृद्धि हुई, जिससे इस मध्यम वर्ग को नुक़सान की बजाय लाभ हुआ। उन्होंने इस मूल्य-वृद्धि का भरपूर फ़ायदा उठाया। तब तक फ़्रांसीसी व्यापार में भी विस्तार होने लगा था, जिसके कारण वाणिज्यिक वर्गों को बहुत लाभ हुआ। इस प्रकार यह वर्ग अमीर बन गया। इसके बावजूद पहले तथा दूसरे सम्पत्ति समूह की तुलना में इनकी सामाजिक प्रस्थिति बहुत ही निम्न थी। व्यापार, उद्योग, बैंकिंग आदि पर नियंत्रण हो जाने पर भी दरबार या प्रशासन में बुर्जुआ वर्ग का कोई प्रभाव नहीं था। पहले दोनों सम्पत्ति समूह उन्हें हीन समझते थे और राजा उनकी तरफ़ ध्यान नहीं देता था। इसलिए उनके लिए राजसत्ता हासिल करना आवश्यक हो गया।

धर्मनेता तथा नोबल कुल आबादी का केवल दो प्रतिशत थे, किंतु वे लगभग पैंतीस प्रतिशत सम्पत्ति के मालिक थे। किसानों की आबादी अस्सी प्रतिशत थी, किंतु उनके पास केवल तीस प्रतिशत सम्पत्ति थी। पहले दो समूह सरकार को कोई कर नहीं देते थे। दूसरी ओर, किसानों पर तरह-तरह के कर लगे हुए थे। वे गिरजाघरों और सामंतों को कर देने के साथ-साथ सरकार को भी आय कर, चुंगी कर, भूमि कर आदि देते थे। इससे पता चलता है कि उस समय किसान ग़रीबी तथा बदहाली से कितने त्रस्त थे। वे पहले दोनों सम्पत्ति समूहों का बोझ अपने कंधों पर उठाए हुए थे। इन सब हालातों के अतिरिक्त उस काल में क़ीमतों में भी अत्यधिक वृद्धि हुई। 1720-1789 के दौरान सभी वस्तुओं की क़ीमतों से लगभग पैंसठ प्रतिशत बढ़ोतरी हुई थी।

1.4.2 फ़्रांसीसी समाज के राजनीतिक पहलू

जैसा कि हर जगह था फ़्रांस के राजतंत्र में भी राजा के शासन करने के दैविक अधिकार को मान्यता प्राप्त थी। लगभग दो सौ वर्षों तक फ़्रांस पर बोर्बन राजवंश ने शासन किया। राजा के शासन में आम लोगों को किसी तरह का व्यक्तिगत अधिकार प्राप्त नहीं था। उनका काम केवल तरह-तरह से राजा तथा नोबल वर्ग की सेवा करना था। राजा का हुक्म ही क़ानून था और राजा के आदेश पर किसी को भी गिरफ़्तार किया जा सकता था तथा इसके लिए मुकदमे आदि की कोई ज़रूरत नहीं होती थी। अलग-अलग इलाक़ों में अलग-अलग क़ानून लागू थे, जिससे भ्रम तथा मनमानी का माहौल बना रहता था। राजा की आय और राज्य की आय से एक ही अभिप्राय होता था अर्थात् सरकार की आय ही राजा की आय होती थी।

1.4.3 फ़्रांसीसी समाज के आर्थिक पहलू

लुई-14 के शासन काल से ही फ़्रांस के राजाओं ने कई लड़ाइयाँ लड़ी जिनमें काफ़ी धन व्यर्थ हुआ। 1715 में लुई-14 की मृत्यु के समय फ़्रांस की आर्थिक स्थिति बहुत कमज़ोर हो चुकी थी। लुई-15 हालत में सुधार लाने की बजाय महाजनों से ऋण लेकर काम चलाने लगा। फ़्रांस उस समय कितने गहरे संकट से गुजर रहा था, इसकी व्याख्या लुई-15 के मशहूर कथन "मेरे बाद प्रलय" (after me the deluge) से स्पष्ट हो जाती है। लुई-16 एकदम कमज़ोर तथा प्रभावहीन राजा था, जिसे फ़्रांस की दिवालिया सरकार विरासत में मिली थी। उसकी पत्नी महारानी मारी आन्तोनेत अपनी फ़िज़ूलख़र्ची के साथ-साथ एक इतिहास प्रसिद्ध वाक्य के लिए भी जानी जाती है। यह वाक्य (उत्तर) उसने फ्रांस की भूखी जनता के सामने तब बोला था जब खाना माँगने के लिये जनता महल के बाहर इकट्ठी हुई थी। महारानी ने कहा था "यदि तुम्हारे पास ब्रेड (रोटी) नहीं है तो केक खा लो।"

आइए, अब हम फ़्रांस के उस बौद्धिक विकास का विवेचन करें, जो अंतत: क्रांति की प्रज्वलित शक्ति सिद्ध हुआ।

1.4.4 फ़्रांस में बौद्धिक विकास का सिलसिला

अट्ठारहवीं शताब्दी में अन्य यूरोपीय देशों की भांति फ़्रांस ने भी तर्क और बुद्धिवाद के युग में प्रवेश किया। उस समय के कुछ प्रमुख दार्शनिक तर्कवादी थे, जिनका यह विश्वास था कि सत्य को तर्क के आधार पर प्रमाणित किया जा सकता है। इन दार्शनिकों के विचारों का फ़्रांसीसी लोगों पर काफ़ी प्रभाव पड़ा। इनमें से कुछ थे - मांटेस्क्यू (1689-1755), लॉक (1632-1704), वॉल्टेयर (1694-1778) तथा रूसो (1712-1778)।

मांटेस्क्यू ने अपनी पुस्तक, *द स्पिरिट ऑफ़ द लॉ*, में यह विचार व्यक्त किया कि प्रशासनिक, विधायी और न्यायिक सत्ता का एक स्थान पर केन्द्रीयकरण नहीं होना चाहिए। वह अधिकारों के पृथकीकरण के सिद्धांत और व्यक्ति की स्वतंत्रता के पक्ष में था।

ब्रिटिश दार्शनिक लॉक की मान्यता थी कि प्रत्येक व्यक्ति के कुछ अधिकार हैं, जो किसी भी सत्ता द्वारा हथियाए नहीं जा सकते। ये अधिकार हैं: जीवन का अधिकार, सम्पत्ति का अधिकार और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार। उसका यह मत था कि जो शासक अपनी जनता को इन अधिकारों से वंचित करे उसे हटा दिया जाना चाहिए और उसके स्थान पर ऐसे शासक को सत्ता सौंपी जानी चाहिए, जो इन अधिकारों की रक्षा करने में समर्थ हो।

फ़्रांसीसी दार्शनिक वाल्टेयर ने धार्मिक सहिष्णुता और बोलने की स्वतंत्रता यानी फ़्रीडम ऑफ़ स्पीच का समर्थन किया। वह व्यक्तियों के बोलने तथा अभिव्यक्ति के अधिकारों के भी पक्ष में था।

रूसो ने अपनी विख्यात पुस्तक, *द सोशल कांट्रेक्ट*, में लिखा कि किसी देश की जनता को अपना शासक चुनने का अधिकार है। उसका विश्वास था कि लोगों के व्यक्तित्व का विकास तभी संभव है, जब उनकी अपनी पसंद की सरकार हो ।

इन तथा अन्य प्रमुख विद्धानों के विचारों ने फ़्रांसीसियों की मानसिकता को झकझोर दिया। इसके अलावा, जो फ़्रांसीसी लोग ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ़ स्वतंत्रता की लड़ाई में अमरीका की सहायता के लिए भेजी गई फ़्रांसीसी फ़ौज में शामिल थे, वे अमरीका से समानता तथा अपनी सरकार स्वयं चुनने के अधिकार का विचार लेकर स्वदेश लौटे थे। स्वतंत्रता और समानता के इन विचारों ने फ़्रांसीसी मध्यम वर्ग को बहुत प्रभवित किया। अभी तक आपने फ़्रांसीसी क्रांति के दौरान समाज के बुनियादी स्वरूप के बारे में जानकारी प्राप्त की है। आइए, अब हम उस दौरान हुई कुछ मुख्य घटनाओं की चर्चा करें।

1.4.5 महत्वपूर्ण घटनाएं

i) फ़्रांस में 'एस्टेट जनरल' (Estate General) नाम की एक संसदीय संस्था थी जिसमें तीनों सम्पत्ति समूहों के प्रतिनिधि थे। किंतु 1614 के बाद उसकी कोई बैठक नहीं हुई थी। 1778 में लुई-16 को मजबूर होकर परिस्थिति में भेद किए बगैर सभी लोगों पर कर लगाने पड़े। राजा के विलासितापूर्ण खर्चों तथा अमरीका की स्वतंत्रता की लड़ाई में सहायता देने के फलस्वरूप फ़्रांसीसी सरकार दिवालिया हो चुकी थी।

जब धनी नोबल वर्ग पर भी कर लगाये गए तो उन्होंने एस्टेट जनरल की बैठक की मांग की, क्योंकि उनका विचार था कि कर लगाने का अधिकार केवल एस्टेट जनरल को है। 5 मई, 1789 को इस संस्था की बैठक हुई किंतु पिछली प्रणाली के विपरीत इस बार तीसरी एस्टेट के प्रतिनिधियों ने मांग की कि सभी सम्पत्ति समूहों के प्रतिनिधि एकत्र होकर एक सभा के सदस्यों के रूप में मतदान करें। किंतु पहले दो सम्पत्ति समूहों के लोग इसके लिए तैयार नहीं थे।

एक ही सभा में तीसरी एस्टेट के साथ बैठने से पहली दो एस्टेटों के इन्कार कर देने पर राष्ट्रीय असेम्बली का गठन हुआ। मध्यम वर्ग के नेताओं और कुछ उदार नोबलों के नेतश्त्व में हुई राष्ट्रीय असेम्बली की बैठक का कड़ा विरोध हुआ। 20 जून, 1789 को जब पेरिस के निकट वर्साई में निर्धारित बैठक के लिए सदस्य पहुँचे तो हाल पर ताला लगा था और राजा के सैनिक वहां पहरा दे रहे थे। इस पर राष्ट्रीय असेम्बली के सदस्यों ने अपने नेता बेली के नेतृत्व में निकट के एक भवन में, जो कि टेनिस का कोर्ट था, अपनी बैठक की। इसी बैठक में उन्होंने फ़्रांस के लिए नया संविधान बनाने की शपथ ली। फ़्रांसीसी क्रांति के आरम्भ का बिगुल बजाने वाली यह शपथ टेनिस कोर्ट की शपथ (Oath of the Tennis Court) के नाम से विख्यात है।

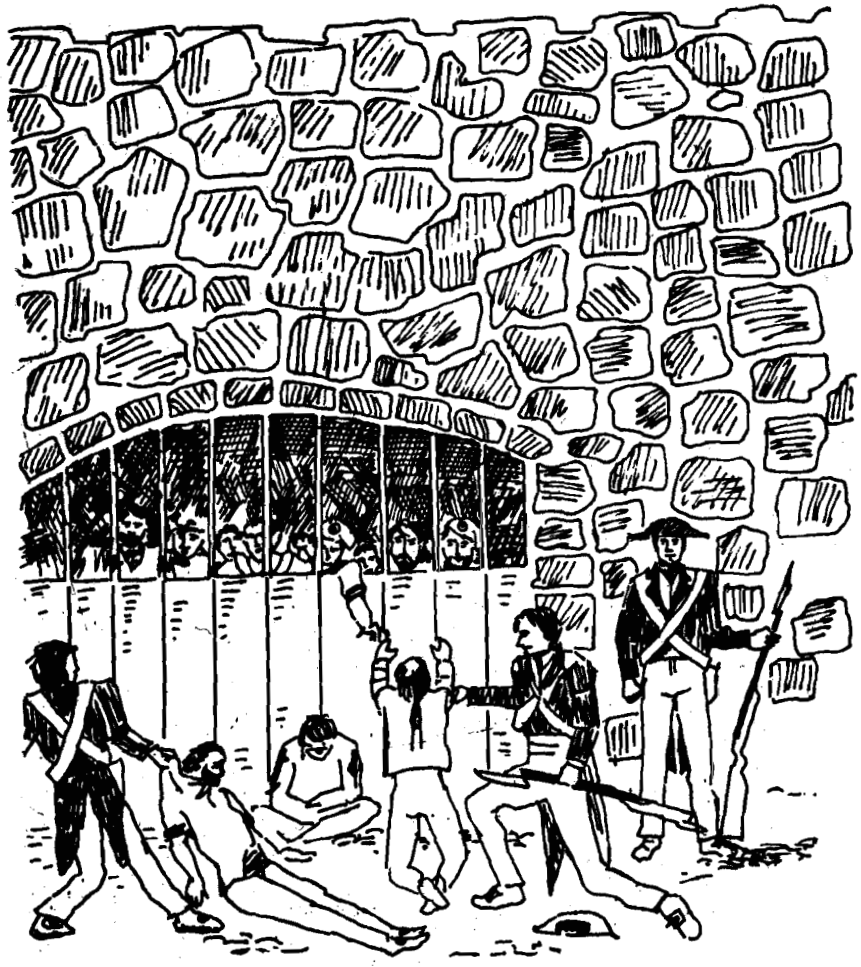

चित्र 1.1: बेस्टाइ जेल पर आक्रमण

ii) 14 जुलाई, 1789 को फ्रांसीसी क्रांति की एक अति महत्वपूर्ण घटना घटी। उस दिन एक पुरानी शाही जेल बेस्टाइ पर धावा बोल दिया गया। यह जेल दमन का प्रतीक था। मध्यम वर्ग के कुछ नेताओं के नेतृत्व में पेरिसवासियों की भीड़ ने जेल के फाटक खोल दिए और कैदियों को रिहा कर दिया (देखें चित्र 1.1: बेस्टाइ जेल पर आक्रमण)। इस घटना के पीछे दो कारण थे। एक था भोजन की कमी और दूसरा था एक लोकप्रिय मंत्री नेकर की बर्खास्तगी। शासक वर्ग, विशेषकर राजा, के खिलाफ़ पेरिस की जनता ने बगावत कर दी। फ्रांस में इस दिन को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है।

iii) संविधान सभा (1789-1791) ने मानव अधिकारों की घोषणा की। इस सभा में तीसरी एस्टेट के प्रतिनिधि तथा पहली दो एस्टेटों के **उदारवादी** सदस्य थे। इस घोषणा में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, धर्म की स्वतंत्रता तथा मनमाने दंड से मुक्ति की गारंटी का प्रावधान था। इसमें धर्म नेताओं तथा नोबल वर्ग के विशेष अधिकार समाप्त कर दिए गए। राजा के शासन करने के दैविक अधिकार की अब कोई मान्यता नहीं रही। कई और महत्वपूर्ण सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन भी किए गए। इस घोषणा में कहा गया कि सभी व्यक्ति जन्म से समान है और कानून के सामने भी वे समान रहेंगे। लोगों को अपनी पसंद की सरकार चुनने तथा दमन का विरोध करने का अधिकार है। सभी लोगों को व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार दिया गया। इस प्रकार, स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व के विचारों को इस घोषणा में गौरवान्वित किया गया। स्वतंत्रता और समानता से पुराने सामंतवादी समाज में पाए जाने वाले पैतृक विशेषाधिकारों, दासता और तानाशाही के युग का अंत हो गया।

iv) 1791 में राजा ने फ्रांस से भागने का प्रयास किया, किंतु सीमा पर लोगों ने उसे पहचान लिया और वापस लाकर राजा को बंदी बना लिया गया।

v) पेरिस में नई लेजिस्लेटिव असेम्बली (1791-1792) का गठन किया गया, इसमें गिरोंडिन (Girondin) तथा जैकोबिन (Jacobin) नाम के दो महत्वपूर्ण समूह शामिल थे। ये समूह राजा को देशद्रोही मानते थे और गणराज्य की स्थापना के समर्थ थे।

vi) देशद्रोह का अपराधी पाए जाने के बाद 21 जनवरी, 1793 को राजा लुई-16 की लोगों के सामने गिलोटिन यानी सिर काटकर हत्या कर दी गई। बाद में उसी वर्ष महारानी मारी आन्तोनेत को भी मौत के घाट उतार दिया गया। फ्रांस को गणराज्य घोषित कर दिया गया।

vii) फ्रांस में "आंतक का दौर" (Reign of Terror) नामक एक युग आया, जिसमें अनेक नोबलों, पादरियों तथा कुछ क्रांतिकारियों को भी मृत्युदंड दिया गया। यह दौर तीन वर्ष तक चला।

viii) 1795 में डायरेक्टोरेट की स्थापना की गई। चार वर्ष बाद 1799 में निकट के एक द्वीप कोर्सिका के एक युवा सैनिक अधिकारी ने डायरेक्टोरेट का तख़्ता पलट दिया। इस युवक का नाम नेपोलियन बोनापार्ट था। वह खुद डायरेक्टर बन गया और उसने फ्रांस में स्थिर सरकार उपलब्ध कराई, जिसकी फ्रांसवासी लंबे समय से कामना कर रहे थे। इस प्रकार डायरेक्टोरेट को सत्ता से हटाने वाले नेपोलियन बोनापार्ट के समय में फ्रांसीसी क्रांति का पटाक्षेप हुआ।

उपरोक्त विवरण से आपको मोटे तौर पर यह समझ में आ गया होगा कि फ्रांसीसी क्रांति क्या थी और मानव सभ्यता के विकास में इसकी भूमिका कितनी महत्वपूर्ण रही। इस क्रांति ने यूरोपीय समाज के राजनीतिक स्वरूप को बदल डाला। सामंतवाद के युग के स्थान पर **लोकतंत्र** के युग का सूत्रपात हुआ। इस क्रांति के कारण ऐसे अनेक नए विषय उभरे, जिनपर प्रारंभिक समाजशास्त्रियों ने विचार किया। इन महत्वपूर्ण विषयों में सम्पत्ति का सामूल रूपांतरण भी एक विषय है। राजनीतिक ढाँचे में परिवर्तन से जो सामाजिक अव्यवस्था पैदा हुई, उसने आर्थिक ढाँचे को भी प्रभावित किया। उस समय एक नया सत्ताधारी वर्ग, बुर्जुआ वर्ग, उभर रहा था। इस विषय पर अधिक जानकारी अगले भाग में दी जा रही है। आइए, नई लहर के बारे में जानने हेतु हम पहले औद्योगिक क्रांति का विवेचन करें।

1.5 औद्योगिक क्रांति

औद्योगिक क्रांति 1760 के आसपास ब्रिटेन में प्रारंभ हुई। औद्योगिक क्रांति से पहले इंग्लैंड, फिर अन्य यूरोपीय देशों तथा बाद में अन्य महाद्वीपों में भी लोगों के सामाजिक और आर्थिक जीवन में जबरदस्त बदलाव आया। विशेषकर इंग्लैंड द्वारा नए क्षेत्रों की खोज व इसके साथ-साथ व्यापार एवं वाणिज्य में वृद्धि तथा इसके फलस्वरूप शहरों में विकास के कारण यूरोप में चीज़ों की मांग बढ़ने लगी। कपड़ा जैसी परंपरागत उपभोक्ता वस्तुओं का निर्माण पहले घरेलू स्तर पर होता था। उत्पादन की घरेलू परंपरा प्रचलित थी। इसमें बदलाव आया।

1.5.1 नये अन्वेषण

औद्योगिक क्रांति के दौरान नए औज़ारों तथा नई तकनीकों का विकास हुआ, जिनसे व्यापक पैमाने पर वस्तुएं तैयार हो सकती थीं। 1760 से 1830 के बीच औज़ारों, तकनीकों और उत्पादन के प्रबंध में कई नए आविष्कार हुए जिनसे उत्पादन की फ़ैक्टरी प्रणाली अस्तित्व में

आई। इस प्रकार उत्पादन की सामंतवादी प्रणाली के स्थान पर पँजीवादी प्रणाली विकसित हुई। उद्योगपतियों का वर्ग उभर कर सामने आया, जिसने औद्योगिक प्रणाली को नियंत्रित किया। इस क्रांति के कारण समाज में हाथ से बनी वस्तुओं का पुराना युग समाप्त हो गया और यंत्र-निर्मित वस्तुओं के नए युग का आगमन हुआ।

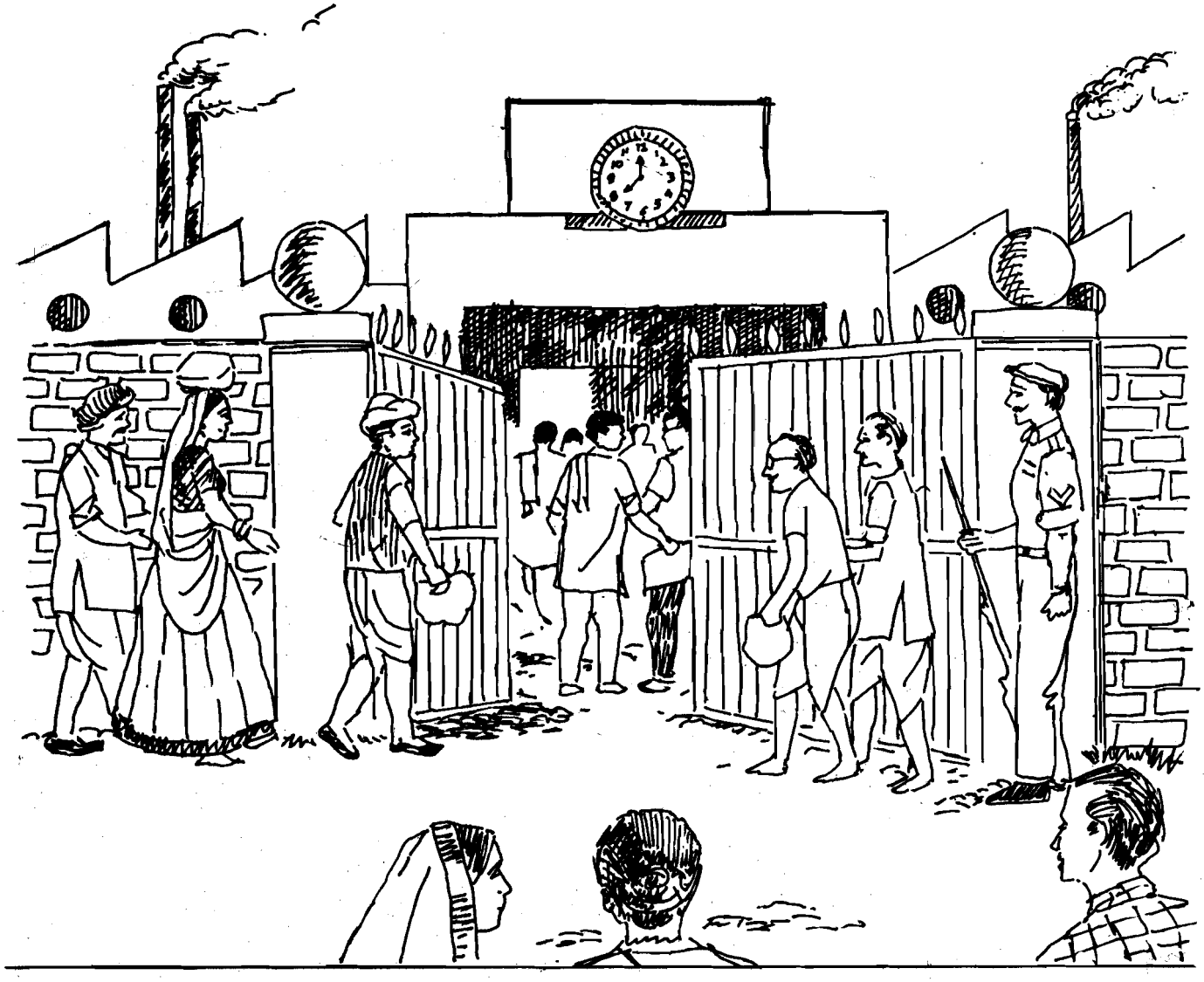

चित्र 1.2: घरेलू उत्पादन से औद्योगिक उत्पादन की तरफ़ परिवर्तन

जो महत्वपूर्ण यांत्रिक आविष्कार हुए, उमें से कछ का परिचय यहाँ दिया जा रहा है। 1767 में एक अंग्रेज़ बुनकर जेम्स हारग्रीव्स ने स्पिनिंग जेनी का आविष्कार किया। यह एक आयताकार सरल मशीन थी। इसमें कई कतुए (spindles) लगे थे, जिन्हें एक ही कताई चक्र से चलाया जा सकता था। 1769 में एक अंग्रेज़ नाई आर्कराइट ने वाटर फ्रेम मशीन ईजाद की। यह मशीन इतनी बड़ी थी कि इसे घर में रखना मश्किल था इसलिए इसे लगाने के लिए विशेष इमारत की ज़रूरत पड़ी। यहीं से फ़ैक्टरी प्रणाली का सूत्रपात हुआ (देखें चित्र 1.2: घरेलू उत्पादन से औद्योगिक उत्पादन की तरफ़)। 1779 में सैमुअल क्रांप्टन ने इंग्लैंड में "म्यूल" नाम की एक एक और मशीन बनाई। इनके अतिरिक्त और भी अनेक आविष्कार हुए, जिन्होंने यूरोपीय समाज के औद्योगिक विकास में योगदान दिया।

सोचिए और करिए 2

आपने अभी समाज तथा समाज में उपजे विचारों के बीच संबंधों के बारे में पढ़ा है। आपको चौदहवीं से अट्ठारहवीं शताब्दी के दौरान तथा फ्रांसीसी क्रांति और औद्योगिक क्रांति के काल में यूरोप में हुए सामाजिक परिवर्तनों की भी जानकारी मिली।

इन विचारों तथा परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए भारतीय समाज के कम से कम दो ऐसे उदाहरण बताइए जब विचारों ने समाज को अथवा समाज ने विचारों को प्रभावित किया हो।

"समाज और विचार" विषय पर लगभग एक पृष्ठ की टिप्पणी लिखिए। यदि संभव हो तो अपने अध्ययन केंद्र के अन्य विद्यार्थियों द्वारा लिखी गई टिप्पणियों से अपनी टिप्पणी की तुलना कीजिए।

1.5.2 समाज और औद्योगिक क्रांति का प्रभाव

समाज की अर्थव्यवस्था में परिवर्तन के फलस्वरूप अनेक सामाजिक परिवर्तन होने लगे। पँजीवाद के और जटिल बन जाने पर बैंक, बीमा कम्पनियों, वित्तनिगम आदि का गठन हुआ। इसके फलस्वरूप औद्योगिक कामगारों, प्रबंधकों तथा पूँजीपतियों का नया वर्ग उभरा।

औद्योगिक समाज में अन्य लोगों की भांति कपड़ा मिल में किसान भी सूत लपेटने लगे। गांवों के खुले वातावरण की बजाय वे तंग और दूषित माहौल में रहने लगे। उत्पादन बढ़ने से जनसंख्या में वृद्धि होने लगी। इससे शहरीकरण में तेज़ी आ गई। औद्योगिक शहरों की संख्या बड़ी तेज़ी से बढ़ने लगी। औद्योगिक शहरों में आर्थिक-सामाजिक विषमता बहुत अधिक थी। कारखानों के कारीगरों का रोज़ एक-ही तरह का काम करने से मनउचाट होता था और उन्हें अपने काम से संतुष्टि नहीं मिलती थी। मार्क्सवादी लहज़े में कहा जाए तो कामगार अपने ही श्रम से उत्पादित वस्तु से कट गया। औद्योगिक समाज में शहरी जीवन एकदम अलग तरह का नीरस जीवन हो गया।

परंपरावादी तथा परिवर्तनवादी दोनों तरह के विचारकों पर इन परिवर्तनों का प्रभाव पड़ा। परंपरावादियों को आशंका हुई कि इन स्थितियों से अराजकता और अव्यवस्था फैलेगी। ऐंगल्स जैसे परिवर्तनकारी चिंतकों का विचार था कि औद्योगिक श्रमिकों द्वारा सामाजिक परिवर्तन का सिलसिला शुरू होगा। यद्यपि सामाजिक चिंतकों में मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण में भिन्नता थी किंतु इस बारे में सभी एकमत थे कि औद्योगिक क्रांति का बहुत ज़ोरदार असर हुआ है। अधिकारों के लिए श्रमिक वर्ग के संघर्ष में निरंतर वृद्धि होती गई।

1.5.3 औद्योगिक क्रांति के महत्वपूर्ण विषय

प्रारंभिक समाजशास्त्रियों ने इस क्रांति के जिन महत्वपूर्ण विषयों पर चिंतन किया, वे इस प्रकार हैं

1) **श्रमिकों की स्थिति:** कारख़ानों में काम करके अपनी आजीविका कमाने वालों का एक नया वर्ग उभरा। प्रारंभिक वर्षों में इन लोगों ने ग़रीबी तथा बदहाली में अपनी ज़िंदगी गुज़ारी। सामाजिक दृष्टि से वे उपेक्षित थे। किंतु साथ ही नई औद्योगिक व्यवस्था में उनकी भूमिका अनिवार्य थी। इससे वे शक्तिशाली सामाजिक ताक़त बन गए। समाजशास्त्रियों ने कहा कि इस वर्ग की निर्धनता स्वाभाविक निर्धनता नहीं बल्कि सामाजिक विपन्नता थी। इसलिए उन्नीसवीं शताब्दी में श्रमिक वर्ग नैतिक तथा चिंतन दोनों दृष्टियों से विचार का विषय बन गया।

2) **ग़रीबी का रूपांतरण:** औद्योगिक क्रांति के दौरान "भूमि" पर परम्परागत अधिकार का महत्व समाप्त हो गया तथा धन या पूँजी का महत्व बढ़ गया। नई औद्योगिक प्रणाली में पूँजी निवेश अधिक प्रभावी हो गया। सामंतवादी भूस्वामियों का ज़ोर कम होने लगा तथा सत्ता नए पूँजीपतियों के हाथ में पहुंच गई। यद्यपि इनमें से कई **पूँजीपति** पहले के भूस्वामी ही थे।

फ्रांसीसी क्रांति में भी जिन मुद्दों को उठाया गया, उनमें ग़रीबी एक प्रमुख समस्या थी। सामाजिक व्यवस्था पर उसका पर्याप्त प्रभाव था। ग़रीबी का सीधा संबंध सदैव ही आर्थिक विशेषाधिकारों, सामाजिक परिस्थिति और राजनीतिक सत्ता से है। सम्पत्ति के ढाँचे में परिवर्तन से समाज के बुनियादी स्वरूप में बदलाव आता है। मार्क्स, तोकविल्ल, ताइन और वेबर के समय से ही 'सम्पत्ति और सामाजिक वर्गीकरण पर संपत्ति का प्रभाव' जैसे प्रश्न समाजशास्त्रियों के लिए चर्चा का विषय बने रहे हैं।

3) **औद्योगिक नगर अर्थात् शहरीकरण:** शहरीकरण का अनिवार्य परिणाम औद्योगीकरण था। उद्योगों के विकास के साथ-साथ बड़ी-बड़ी बस्तियां, आधुनिक शहर एवं कस्बे बसने लगे। वैसे तो प्राचीन काल में भी रोम, एथेंस आदि नगर थे, किंतु नए नगर जैसे कि इंग्लैंड का वस्त्र उद्योग केंद्र मैनचेस्टर आदि अपने स्वरूप में प्राचीन नगरों से एकदम भिन्न थे। पुराने नगर सुसभ्य गरिमा तथा महत्व के लिए विख्यात थे, जबकि इन नए शहरों में दुःख और अमानवीयता का माहौल था। नए शहरों के इन्हीं पहलुओं को लेकर प्रारंभिक समाजशास्त्री चिंतित थे।

4) **प्रौद्योगिकी और कारखाना प्रणाली:** प्रौद्योगिकी तथा कारख़ाना प्रणाली पर उन्नीसवीं शताब्दी में असंख्य पुस्तकें लिखी गई। परंपरावादी तथा परिवर्तनवादी दोनों प्रकार के विचारकों ने अनुभव किया कि ये दोनों प्रणालियां मनुष्य के भावी जीवन को बहुत हद तक बदल देंगी।

प्रौद्योगिकी और कारख़ाना प्रणाली के कारण बड़ी संख्या में गांवों के लोग शहरों में बसने लगे। महिलाएं तथा बच्चे भी श्रमिकों के साथ कारख़ानों में काम करने लगे। इससे पारिवारिक संबंधों में बदलाव आ गया। कारख़ाने के सायरन की आवाज़ लोगों के जीवन की नियंता बन गई। काम पर मनुष्य की बजाय मशीन का प्रभुत्व हो गया। जैसे कि पहले भी कहा गया है कि श्रमिक तथा उसके श्रम के उत्पाद के बीच संबंध बदल गया। श्रमिक अब वेतन पाने के लिए काम करता था। वस्तु के प्रति किसी का अपनत्व भाव नहीं रहा था और वह मशीन की उत्पत्ति मानी जाती थी। उस पर फ़ैक्टरी के मालिक का ही अधिकार था। जीवन तथा काम में पहले की भांति पाये जाने वाला जुड़ाव समाप्त हो गया था।

सोचिए और करिए 3

फ्रांसीसी क्रांति और औद्योगिक क्रांति के महत्वपूर्ण विषयों के भागों का ध्यान से अध्ययन कीजिए। इस इकाई में दिए गए इन महत्वपूर्ण विषयों पर अपने समाज के संदर्भ में दो वरिष्ठ व्यक्तियों के साथ विचार-विमर्श कीजिए। भारतीय समाज के संदर्भ में इन में से किसी एक विषय पर एक पृष्ठ की टिप्पणी लिखिए। उदाहरण के लिए "भारतीय समाज और श्रमिकों की स्थिति" शीर्षक लिया जा सकता है। यदि संभव हो तो अपने अध्ययन केंद्र के अन्य विद्यार्थियों की टिप्पणी से अपनी टिप्पणी की तुलना कीजिए।

मार्क्स के अनुसार, मनुष्य मशीन का गुलाम बन गया तथा इसके परिणामस्वरूप श्रमिक उत्पादन से अलगावित हो गया। समाजशास्त्रियों की राय थी कि उत्पादन की औद्योगिक प्रणाली के फलस्वरूप श्रमिक वर्ग बौद्धिक, मानसिक तथा व्यावहारिक रूप से यांत्रिक हो गया था। इन

विषयों के बारे में आपको इस पाठ्यक्रम के प्रस्तुत खंड तथा अन्य खंडों की इकाइयों में जानकारी मिलेगी। दर्खाइम, मार्क्स तथा वेबर जैसे अग्रणी समाजशास्त्रियों की रचनाओं में ये विचार बार-बार सामने आते रहे हैं।

बोध प्रश्न 3

i) औद्योगिक क्रांति के कारण यूरोप में हुए तीन परिवर्तनों की सूची दीजिए।

क) .....

ख) .....

ग) .....

ii) निम्नलिखित वाक्यों में ख़ाली स्थान भरिए।

क) औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप अर्थव्यवस्था ..... से बदल कर पूँजीवादी हो गई।

ख) फ़्रांसीसी क्रांति से ..... विशेषाधिकारों और सामंतवाद पर आधारित राजनीतिक ढांचे का अंत हो गया।

ग) 14 जुलाई, 1789 का दिन फ़्रांस में ..... दिवस के रूप में मनाया जाता है।

1.6 समाजशास्त्र के उदय की धारा पर लक्षित बौद्धिक प्रभाव

अट्ठारहवीं तथा उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान यूरोप में हुए परिवर्तनों के फलस्वरूप समाजशास्त्र का उदय हुआ। इसलिए प्रारंभिक समाजशास्त्रियों की रचनाओं में जिन विचारों का बार-बार उल्लेख मिलता है, वे अनिवार्यत: उसी युग से संबंधित हैं।

प्रारंभिक समाजशास्त्र मुख्यत: अट्ठारहवीं शताब्दी के प्रबोधन के चिन्तकों से प्रभावित है। अत: प्रबोधन ही समाजशास्त्रीय सिद्धांत की उत्पत्ति के अध्ययन का सर्वाधिक उपयुक्त परिवर्तन-बिन्दु प्रतीत होता है। इस युग की तीन धारणाएं प्रमुख थीं।

पहली धारणा थी कि समाज के अध्ययन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की शुरुआत प्रबोधन की परंपरा में हुई। प्राकृतिक विज्ञानों की विधियां अपनाते हुए अपने सभी पूर्ववर्ती विचारकों की तुलना से अधिक युक्तिसंगत ढंग से सामाजिक दशाओं का अट्ठारहवीं शताब्दी के विचारकों ने वैज्ञानिक अध्ययन प्रारंभ किया। मनुष्यों और उनकी प्रकृति तथा समाज का अध्ययन करने के लिए इन विचारकों ने विश्लेषण के वैज्ञानिक सिद्धांतों का इस्तेमाल किया।

दूसरी धारणा थी कि सामाजिक संस्थाओं तथा प्राकृतिक परिवेश से उनके संबंधों की उपयुक्तता को जांचने के लिए उन्होंने तर्क को मापदंड के रूप में अपनाया। उनकी मान्यता थी कि मनुष्य अनिवार्य रूप से तर्कसंगत है और यह तार्किकता उसे विचार एवं कर्म की स्वतंत्रता दिला सकती है।

तीसरी धारणा थी कि उनका विश्वास था कि मनुष्य उत्कृष्टता प्राप्त करने में सक्षम हैं। सामाजिक परंपराओं की आलोचना करके तथा उन्हें बदलकर यह संभव हो जाता है कि वे अपने लिए अधिक मात्रा में स्वतंत्रता हासिल करें, जिसके फलस्वरूप उनकी सृजनात्मक शक्तियों को अधिक व्यावहारिक रूप मिल सकता है।

समाजशास्त्रीय चिंतकों ने ऊपर दी गई तीन धारणाओं पर विशेष ध्यान दिया था। इनके अतिरिक्त प्रबोधन युग के बाद की निम्नलिखित तीन अन्य बौद्धिक अवधारणाओं ने भी यूरोप में समाजशास्त्र के उदय को प्रभावित किया।

i) इतिहास का दर्शन

ii) विकास के जीव वैज्ञानिक सिद्धांत

iii) सामाजिक स्थितियों के सर्वेक्षण

ये तीन बौद्धिक दृष्टिकोण समाजशास्त्र के अग्रदूत सिद्ध हुए और प्रारंभिक समाजशास्त्रियों की रचनाओं में इनकी पूरी झलक मिलती है। आइए, इन तीनों अवधारणाओं की संक्षेप में चर्चा करें।

1.6.1 इतिहास का दर्शन

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में इतिहास का दर्शन एक महत्वपूर्ण बौद्धिक दृष्टिकोण बन गया। इस दर्शन की बुनियादी अवधारणा यह थी कि समाज सरल से जटिल अवस्था की ओर बढ़ने में निश्चय ही कई चरणों में से होकर गुज़रता है। समाजशास्त्र में इतिहास के दर्शन के योगदान का यहाँ संक्षिप्त मूल्यांकन किया जा सकता है। दार्शनिक स्तर पर इस धारणा ने विकास तथा प्रगति के विचार दिए हैं तथा वैज्ञानिक स्तर पर ऐतिहासिक युगों और सामाजिक प्ररूपों की अवधारणाएं प्रदान की हैं। अब्ब सेंट पियरे और गियाम्बातिस्ता जैसे समाजशास्त्रियों ने इतिहास के दर्शन का विकास किया। वे समाज के केवल आर्थिक, राजनीतिक अथवा सांस्कृतिक पहलुओं के नहीं अपितु समूचे समाज के अध्ययन के लिए विचारशील थे (बोटोमोर 1962:14-15)। बाद में कॉम्ट, स्पेंसर, मार्क्स तथा अन्य अनेक विचारकों की समाजशास्त्रीय रचनाओं में भी इस बौद्धिक प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं।

1.6.2 विकास के जीव वैज्ञानिक सिद्धांत

विकास के जीव वैज्ञानिक सिद्धांत ने इतिहास के दर्शन के प्रभाव को और पुष्ट कर दिया। समाजशास्त्र विकासवादी दृष्टिकोण की ओर अग्रसर होने लगा, जिसमें सामाजिक विकास के प्रमुख चरणों को जानने की कोशिश शामिल थी। इस दृष्टिकोण का स्वरूप जीव विज्ञान की तरह का था, जिसमें समाज की विस्तृत अवधारणा को एक जीव के रूप में माना गया। इसके साथ-साथ सामाजिक विकास की सामान्य पदावली निर्धारित करने के प्रयास भी किए गए। हर्बर्ट स्पेंसर तथा दर्खाइम इस प्रकार का चिंतन तथा लेखन करने वालों के अच्छे उदाहरण हैं।

1.6.3 सामाजिक परिस्थितियों के सर्वेक्षण

सामाजिक सर्वेक्षण आधुनिक समाजशास्त्र का महत्वपूर्ण तत्व है। इसका उदय दो कारणों से हुआ। एक कारण है: बढ़ता हुआ यह विश्वास कि प्राकृतिक विज्ञानों की अध्ययन विधियाँ मानवीय विषयों के अध्ययन पर लागू की जानी चाहिए और ये विधियाँ लागू की जा सकती हैं। इनके आधार पर मानवीय कार्यकलापों का वर्गीकरण तथा मूल्यांकन संभव है। दूसरा कारण है ग़रीबी के प्रति चिंता (सामाजिक समस्या) जो इस मान्यता पर आधारित है कि ग़रीबी प्राकृतिक नहीं बल्कि सामाजिक स्थिति है और सामाजिक सर्वेक्षण से इस समस्या का निदान कर पाना संभव है। सामाजिक सर्वेक्षण समाजशास्त्रीय अन्वेषण की एक प्रमुख विधि है। इस विधि का बुनियादी सिद्धांत यह है कि सामाजिक स्थितियों के ज्ञान से ही समाज में मौजूद सामाजिक समस्याओं को समझा जा सकता है तथा समझने के बाद उनके समाधान ढूँढे जा सकते हैं।

बोध प्रश्न 4

i) समाजशास्त्र के विकास में निम्नलिखित में से किन पहलुओं ने योगदान दिया है?

क) प्रबोधन

ख) प्राकृतिक विज्ञानों की प्रगति

ग) धार्मिक प्रभुत्व में वृद्धि

घ) राजतंत्र का दृढ़ होना

ङ) कारख़ाना प्रणाली

च) शहरी तंग या मलिन बस्तियों में वृद्धि

छ) ग़रीबी और गंदगी में बढ़ोत्तरी

ज) औद्योगिक क्रांति

झ) आधुनिक राज्य व्यवस्था का उदय

ट) व्यक्तिगत अधिकारों की धारणा

ठ) दैविक अधिकार की धारणा का पतन

ड) यह विश्वास कि समाज मानव-निर्मित है

ढ) यह विश्वास कि मनुष्य समाज को बदल सकता है

ii) किन दो बौद्धिक दृष्टिकोणों ने समाजशास्त्र के उदय को प्रभावित किया? अपना उत्तर दस पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

1.7 सारांश

इस इकाई में आपने पढ़ा कि सामाजिक स्थितियां लोगों के विचारों को किस प्रकार प्रभावित करती हैं। आपने देखा कि अठारहवीं तथा उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोप में हो रहे कुछ परिवर्तनों ने समाजशास्त्रियों के चिंतन को किस प्रकार प्रभावित किया। इस तरह समाजशास्त्र का विकास अनिवार्यत: समाज से प्रभावित होने वाले महान विचारकों के चिंतन के परिणामस्वरूप हुआ।

आपको औद्योगिक तथा फ्रांसीसी क्रांति के महत्वपूर्ण विषयों की समाजशास्त्रीय दृष्टि से जानकारी मिली। हमने यूरोप में समाजशास्त्र के उदय को प्रभावित करने वाले बौद्धिक दृष्टिकोणों अर्थात् इतिहास का दर्शन, विकास के जीव वैज्ञानिक सिद्धांत तथा सामाजिक स्थितियों के सर्वेक्षण की भी चर्चा की है।

1.8 शब्दावली

पूँजीपति — उत्पादन की औद्योगिक प्रणाली में पूँजी अर्थात् धन, सम्पति, औज़ार आदि उत्पादन के साधनों के स्वामी वर्ग को पूँजीपति (पूँजीवादी) कहा जाता है।

लोकतंत्र शासन की एक पद्धति जिसमें सत्ता सामूहिक रूप से लोगों में निहित रहती है। यह समाज का शासन है, जिसमें लोगों को राजनीतिक, सामाजिक और कानूनी अधिकारों की समानता दी जाती है।

प्रबोधन (enlightenment) इसका अभिप्राय यूरोपीय इतिहास के उस काल से है, जिसमें अठाहरवीं शताब्दी के फ्रांसीसी दार्शनिकों की चेतना का प्रभाव छाया था। इस युग में यह विश्वास पनपा कि प्रकृति और समाज, दोनों का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन किया जा सकता है। इस दौरान मानवीय तार्किकता और प्रगति के विचार विकसित हुए।

एस्टेट (सम्पत्ति समूह) सत्रहवीं तथा अठाहरवीं शताब्दी के मध्यकालीन यूरोपीय समाज में प्रचलित सामाजिक वर्गीकरण की ऐसी व्यवस्था, जिसमें समाज विभिन्न सामाजिक समूहों में बंटा हुआ था, जिनके ऊपर अलग-अलग कानून लागू होते थे और जिनकी सामाजिक प्रस्थिति अलग-अलग थी।

सामंतवादी (feudal) कृषि क्षेत्रों में भूस्वामित्व की प्रणाली, जिसमें दास भूस्वामियों की सेवा करते थे। इसके बदले भूस्वामी दास को अपनी ज़मीन पर खेती करने तथा रहने की अनुमति देते थे।

उदारवादी (liberal) ऐसा व्यक्ति जो खुले विचारों का है और किसी सत्ता अथवा परंपरागत रूढ़िवादिता अर्थात् पुराने विश्वासों को वरीयता नहीं देता है।

1.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

बर्जर, पी. 1963. *इनवीटेशन टु सोशियॉलॉजी: ए ह्यूमनिस्टिक पर्सपैक्टिव.* ऐंकर बुक्स डबलडे एंड कम्पनी: न्यूयार्क

बोटोमोर, टी.बी. 1962. *सोशियोलॉजी: ए गाइड टु प्राब्लम्स एंड लिट्रेचर.* जॉर्ज ऐलन एण्ड अनविन लिमिटेड: लंदन

इंक्लेस, ए. 1975. *वॉट इज़ सोशियोलॉजी?* प्रेंटिस हॉल: नई दिल्ली

1.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) प्राचीन यूरोपीय समाज परंपरागत सामंतवादी समाज था, जिसमें भूमि ही मूल सम्पत्ति हुआ करती थी। धर्म समाज का मूल आधार था।

ii) क) उदारवादी, क्रांतिकारी
ख) भूमि
ग) नया, केन्द्रीय

बोध प्रश्न 2

i) सन् 1450 से 1800 के मध्यकालीन यूरोप की जड़ तथा ठहरी हुई अर्थव्यवस्था में

परिवर्तनकारी शक्तियों ने यूरोप में वाणिज्यिक क्रांति का सूत्रपात किया। इस क्रांति का कारण यह था कि कुछ यूरोपीय देशों ने व्यापार एवं वाणिज्य के विस्तार के उपाय शुरू किए। पुर्तगाल, स्पेन, हॉलैंड आदि देशों ने विदेशों से व्यापार बढ़ाकर तथा नए क्षेत्रों पर विजय हासिल करके अपनी राजनीतिक तथा आर्थिक सत्ता बढ़ाने के प्रयास किए।

ii) क) मृत मानव शरीर की चीर-फाड़ की अनुमति से शरीर-रचना विज्ञान की जानकारी बढ़ गई। इस ज्ञान के परिणामस्वरूप आधुनिक चिकित्सा शास्त्र का विकास हुआ।

ख) कॉपर्निकस ने इस प्राचीन विश्वास को तोड़ दिया कि पृथ्वी स्थिर है और सूर्य उसके चारों ओर घूमता है। उसने सिद्ध किया कि सूर्य स्थिर है और पृथ्वी उसके चारों और घूमती है। इसे सूर्य केंद्रित सिद्धांत कहा जाता है।

iii) क) औद्योगिक

ख) उन्नीसवीं

ग) पुनर्जागरण

बोध प्रश्न 3

i) क) कृषि पर आधारित पुरानी सामंतवादी प्रणाली के स्थान पर पूँजीवादी कारखाना प्रणाली लागू हो जाने से यूरोप की उत्पादन प्रक्रिया का रूपांतरण हो गया।

ख) उद्योगों में वेतन पर काम करने वाले एक नए श्रमिक वर्ग का उदय हुआ।

ग) शहरी तंग बस्तियों की वृद्धि से लोगों के भौतिक तथा सामाजिक जीवन में बदलाव आया।

ii) क) सामंतवादी

ख) पैतृक

ग) स्वतंत्रता

बोध प्रश्न 4

i) क), ख), च), छ), ज), झ), ट), ठ), ड), ढ)

ii) 'इतिहास का दर्शन' समाजशास्त्र के उदय को प्रभावित करने वाले दो बौद्धिक दृष्टिकोणों में से एक है। इसमें यह माना जाता है कि समाज सरल से जटिल स्वरूप की ओर बढ़ता हुआ कई चरणों में से होकर गुज़रता है अत: प्रगति स्वाभाविक और अवश्यम्भावी है। दूसरा दृष्टिकोण विकास के जीव वैज्ञानिक सिद्धांत का है। समाज की तुलना एक जैविक जीव के साथ किए जाने से यह विश्वास बना कि (क) समाज सरल से जटिल स्वरूप की ओर अग्रसर होता है; और (ख) समाज किसी जीव की भांति संतुलन के प्रति सामंजस्य बनाने के जीव वैज्ञानिक सिद्धांत के अनुसार काम करता है।